B.A. Part 2
Paper III

19.10.20

पेटिनकिन का मौद्रिक सिद्धांत :-

(The patinkin money theory)

जब कीमत स्तर बदलता है, तो वह लोगों के नकदी धारणों की क्रय-शक्ति को प्रभावित करता है जो आगे वस्तुओं का मांग एवं पूर्ति को प्रभावित करती है। यही वास्तविक शेष प्रभाव है। पेटिनकिन ने इस प्रभाव के माध्यम से समरूपता सिद्धांत के अस्तित्व तथा द्विविभाजन को नकारता है। इसके लिए पेटिनकिन किसी समुदाय द्वारा धारित वास्तविक शेषों के स्टॉक (M/P) को उसकी वस्तुओं के लिए मांग पर प्रभाव के रूप में प्रस्तुत करता है। इस प्रकार किसी वस्तु के लिए मांग, वास्तविक शेष तथा सापेक्ष कीमतों पर निर्भर करती है। अब यदि कीमत स्तर बढ़ेगा तो इससे लोगों का वास्तविक शेष (क्रय शक्ति) कम हो जाएगा और वे पहले से कम खर्च करेंगे। इसका मतलब है कि वस्तुओं की मांग कम हो जाएगी और परिणामतः कीमत स्तर गिर जाएगा। इसके विपरीत कीमत स्तर गिरने से वास्तविक शेष बढ़ जाएंगे जिसके परिणामस्वरूप वस्तुओं की कीमतें एवं कीमत स्तर बढ़ेंगे। पेटिनकिन के शब्दों में "यही महत्वपूर्ण बात है जो निरपेक्ष कीमत स्तर का अपने संतुलन मूल्य की ओर गत्यात्मक समूहन - वास्तविक शेष प्रभाव के माध्यम से वस्तु बाजारों को और अन्ततः सापेक्ष कीमतों को प्रभावित करेगा। इस प्रकार निरपेक्ष कीमतें न केवल मुद्रा बाजार में बल्कि अर्थव्यवस्था के वास्तविक क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण कार्य करती हैं। पेटिनकिन ने आगे लक्षित किया है "जब एक बार अर्थव्यवस्था के वास्तविक तथा मौद्रिक आंकड़े बाहरी मुद्रा समेत निश्चित कर दिए जाते हैं, तो अर्थव्यवस्था के सभी बाजार तभी सापेक्ष कीमतों के संतुलन मूल्यों, ब्याज की दर तथा निरपेक्ष कीमत स्तर को एक ही साथ निर्धारित कर देते हैं।" इस तरीके से, पेटिनकिन भी वास्तविक शेष प्रभाव को सामान्य संतुलन विश्लेषण में शामिल कर देता है। क्लासिकी द्विविभाजन और समरूपता सिद्धांत का खण्डन करे और वास्तविक शेष प्रभाव के माध्यम से मुद्रा सिद्धांत तथा मूल्य सिद्धांत का एकीकरण करने के अतिरिक्त, पेटिनकिन ने मुद्रा परिमाण

Scanned by CamScanner

सिद्धांत तथा मूल्य सिद्धांत का स्फीतिकरण करने के अतिरिक्त, पेटिनकि न ने मुद्रा परिमाण सिद्धांत के निष्कर्षों को भी सही ठहराया है। पेटिनकिन के कथनानुसार वास्तविक शेष का मतलब है कि लोगों में मुद्रा के संबंध में भ्रांति नहीं होती। वे केवल अपने नकदी कारणों के वास्तविक मूल्य में ही दिलचस्पी रखते हैं। दूसरे शब्दों में, वे अपने पास मुद्रा यह सोचकर रखते हैं कि "उससे क्या कुछ खरीदा जा सकता है।" इसका मतलब है कि यदि मुद्रा का परिणाम दुगुना कर दिया जाय, तो कीमत-स्तर भी दुगुना हो जाएगा परंतु सापेक्ष कीमतें तथा वास्तविक शेष स्थिर रहेंगे और अर्थव्यवस्था का संतुलन स्तर नहीं बदलेगा।

वास्तविक शेष प्रभाव को आरेखीय रूप से चित्र 1 में दिखाया गया है जिसमें IS तथा LM तकनीक का प्रयोग किया गया है क्योंकि IS वक्र वस्तु बाजार को LM वक्र मुद्रा बाजार को व्यक्त करता है। शुरू में हम ऐसी स्थिति लेते हैं जब अर्थव्यवस्था आय के OY_1 स्तर पर संतुलन में है जब IS तथा LM वक्र एक दूसरे को A बिन्दु पर काटते हैं और जहाँ ब्याज दर Or_1 है। ~~और~~ OY_F को पूर्ण रोजगार ~~का~~ स्तर मानते हुए बेरोजगारी का दबाव $Y_1 - Y_F$ द्वारा मापा गया है जिसके कारण मजदूरी और कीमतें एक साथ गिरती हैं। इसके परिणामस्वरूप लोगों के मुद्रा धारण वास्तविक मूल्य में वृद्धि होती है जो LM वक्र को दाईं ओर LM_1 पर स्थानान्तरित करती है। यह वक्र OY_2 आय-स्तर के B बिन्दु पर IS वक्र को काटता है जिसके फलस्वरूप ब्याज दर Or_0 पर गिरती है जो निवेश को प्रोत्साहित करती है, ~~यह वक्र~~ बचत को हतोत्साहित करती है तथा उपभोग बढ़ाती है। जब भी ब्याज दर अपने न्यूनतम स्तर Or_0 पर गिरती है तो वस्तु बाजार में मांग का स्तर, जो IS वक्र द्वारा व्यक्त किया गया है, इतना अधिक नहीं होता कि वह अर्थव्यवस्था को पूर्ण रोजगार स्तर OY_F तक पहुंचा सके। बल्कि $Y_2 - Y_F$ द्वारा व्यक्त बेरोजगारी अर्थव्यवस्था में मौजूद रहती है। इतनी अधिक बेरोजगारी मजदूरी और कीमतों में और अधिक गिरावट लाती है और उपभोग वस्तुओं की मांग में वृद्धि करती है जो IS वक्र को दाईं ओर IS_1 पर स्थानान्तरित करती है जिससे यह पूर्ण रोजगार स्तर OY_F पर C बिन्दु पर LM_1 वक्र को काटती है।

Scanned by CamScanner

इस प्रकार, मजदूरी और कीमत लोचशीलता की शर्तों के अन्तर्गत जब IS और LM वक्र दाईं ओर शिफ्ट करते हैं तो वास्तविक शोष प्रभाव अन्तत: अर्थव्यवस्था को पूर्ण रोजगार स्तर पर ले आता है, यहाँ तक कि तरलता जाल (trap) की स्थिति BC में भी वैसा कि ऊपर दिखाया गया है जब निवेश ब्याज बेलोच होती है।

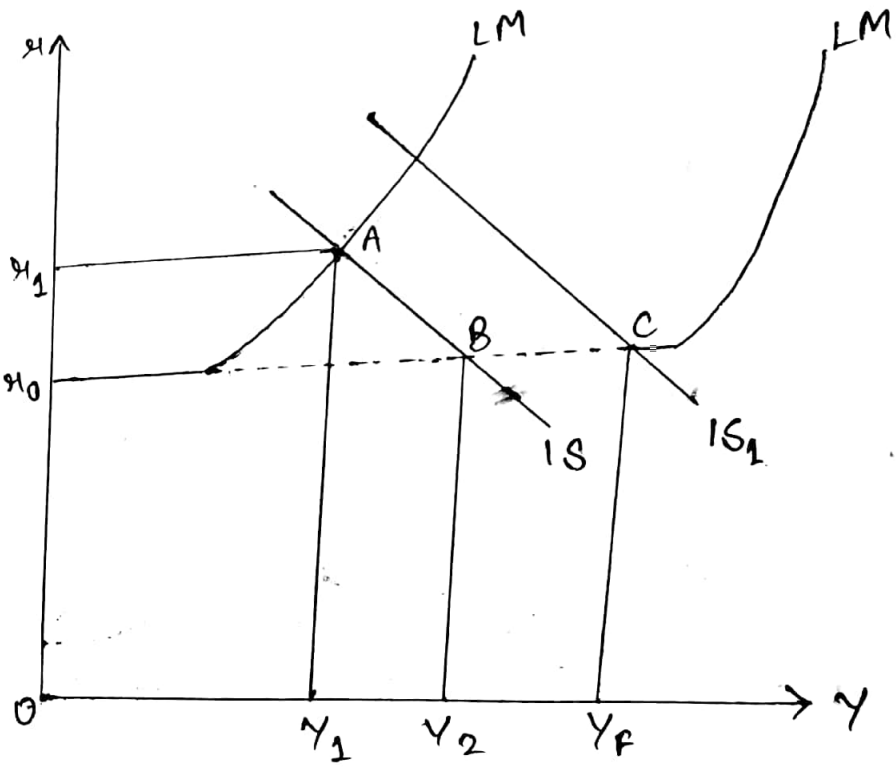

Scanned by CamScanner